तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय

मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश)

दूरस्थ शिक्षा

एम.ए. (पूर्वार्ध) जैनोलॉजी

(प्रथम पत्र)

-विषय-

जैनधर्म एवं संस्कृति का इतिहास

इकाई 1—अनादिकालीन जैनधर्म का ऐतिहासिक स्वरूप

पाठ-1 जैनधर्म का मूल मंत्र-णमोकार महामंत्र

पाठ-2 जैनधर्म की ऐतिहासिकता

पाठ-3 जैनधर्म पूर्णतया आस्तिक धर्म है

पाठ-4 वैदिक एवं श्रमण संस्कृति : एक अनुशीलन

इकाई 2—जैनागम में वर्णित त्रेसठ शलाका पुरुष

पाठ-1 भगवान ऋषभदेव

पाठ-2 श्री अजितनाथ से महावीर पर्यंत तीर्थंकर परम्परा

पाठ-3 बारह चक्रवर्ती

पाठ-4 भरत से भारत : कब, क्यों और कैसे ?

पाठ-5 बलभद्र-नारायण-प्रतिनारायण

इकाई 3—प्रमुख जैन तीर्थ एवं पर्व

पाठ-1 तीर्थ का स्वरूप एवं महत्व

पाठ-2 तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ

पाठ-3 कतिपय ऐतिहासिक प्रमुख तीर्थ

पाठ-4 प्रमुख जैन पर्व, पर्व का अर्थ एवं महत्व

इकाई 4—भगवान महावीर शासन के प्रमुख प्राचीन आचार्य

पाठ-1 गौतम गणधर आदि केवली-श्रुतकेवली परम्परा एवं मूलसंघ परम्परा

पाठ-2 जैनागम में सरस्वती की महिमा

पाठ-3 जैनशासन के प्रभावक आचार्य

पाठ-4 आर्ष परम्परा के संवाहक बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज

इकाई 5—जैन संस्कृति एवं पुरातत्त्व

पाठ-1 जैन संस्कृति की विशेषताएँ

पाठ-2 जैन पुरातत्त्व और मूर्तिकला

पाठ-3 जैनदर्शन लोकतांत्रिक दर्शन है

पाठ-4 देश-विदेश में जैन पुरातत्त्व की प्रतीक महत्वपूर्ण प्रतिमाएँ

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय

मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश)

दूरस्थ शिक्षा

एम.ए. (पूर्वार्ध) जैनोलॉजी

(द्वितीय पत्र)

-विषय-

भारतीय संस्कृति के उन्नयन में जैन आचरण की भूमिका

इकाई 1—गृहस्थ से श्रावक बनने की प्रक्रिया

पाठ-1 गृहस्थ धर्म
पाठ-2 जैनागम में वर्णित श्रावक धर्म
पाठ-3 गृहस्थों के अष्टमूलगुण
पाठ-4 गृहस्थों के षट् आवश्यक कर्म

इकाई 2—गृहस्थों की आचार शुद्धि

पाठ-1 उत्तम आचरण का आधार-शाकाहार
पाठ-2 खानपान की शुद्धि परमावश्यक
पाठ-3 मानव धर्म की विराट भूमिका
पाठ-4 श्रावकाचार संग्रह में वर्णित श्रावक के विशेष कर्तव्य

इकाई 3—आदर्श विद्यार्थी एवं श्रावक के कर्तव्य

पाठ-1 विद्यार्थियों की आदर्श जीवनचर्या
पाठ-2 व्रत उपवास : वैज्ञानिक अनुचिंतन
पाठ-3 श्रावक की त्रेपन कियाएँ
पाठ-4 श्रावक धर्म के एकादश सोपान : ग्यारह प्रतिमा

इकाई 4—जैन मुनि चर्या

पाठ-1 दीक्षा का महत्त्व
पाठ-2 मूलाचार में वर्णित मुनिचर्या
पाठ-3 दिगम्बर मुनि की नित्य-नैमित्तिक क्रियाएं
पाठ-4 संपूर्ण परिग्रह त्याग से ही मोक्ष संभव है

इकाई 5—आर्यिका चर्या (जैन साध्वी चर्या)

पाठ-1 नारी जीवन की उत्कृष्ट साधना-आर्यिका दीक्षा
पाठ-2 आर्यिका की आगमोक्त विनय विधि
पाठ-3 मुनि और आर्यिका की चर्या में अन्तर
पाठ-4 ऐतिहासिक आर्यिकाएँ

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय

मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश)

दूरस्थ शिक्षा

एम.ए. (पूर्वार्ध) जैनोलॉजी

(तृतीय पत्र)

-विषय-

कर्म सिद्धान्त एवं ध्यान साधना

इकाई 1—कर्म का स्वरूप एवं भेद-प्रभेद

पाठ-1 प्राकृतिक कर्म व्यवस्था
पाठ-2 अटल सिद्धान्त है कर्म का
पाठ-3 कर्मबंध के कारण और प्रकार
पाठ-4 कर्म के भेद-प्रभेद

इकाई 2—संसार भ्रमण के कारण-अष्टकर्म

पाठ-1 आत्मा की प्रभा को धूमिल करने वाले ज्ञानावरण-दर्शनावरण
पाठ-2 सुख-दुःख प्रदाता वेदनीय एवं कर्मों का राजा मोहनीय
पाठ-3 चतुर्गति यात्रा संवाहक आयुकर्म एवं शरीर निर्माता नामकर्म
पाठ-4 गोत्र एवं अन्तरायकर्म की फलःस्थिति

इकाई 3—कर्मों का बंध-उदय एवं सत्त्व आदि

पाठ-1 बोए पेड़ बबूल का, आम कहाँ से होय
पाठ-2 कर्मों की विविध अवस्थाएँ
पाठ-3 कर्म प्रकृतियों में चार निक्षेप
पाठ-4 कर्मसिद्धान्त और सम्यग्दर्शन

इकाई 4—विविध दृष्टिकोणों से कर्मसिद्धान्त की व्याख्या

पाठ-1 तप से होता है कर्मों का क्षय
पाठ-2 कर्म सिद्धान्त के अन्तर्गत पर्याप्ति की विवेचना (आधुनिक विज्ञान के संदर्भ में)
पाठ-3 कर्म सिद्धान्त का मनोवैज्ञानिक स्वरूप
पाठ-4 विविध जैन ग्रंथों के आधार से जानें कर्म सिद्धान्त

इकाई 5—सामायिक विधि एवं ध्यान साधना

पाठ-1 कृतिकर्मपूर्वक सामायिक विधि
पाठ-2 सामायिक के लिए योग्य काल-आसन-मुद्रा आदि
पाठ-3 ध्यान, ध्याता एवं ध्येय
पाठ-4 चिन्ता छोड़ो चिन्तन करो
पाठ-5 ध्यान के विषय में विशेष ज्ञातव्य

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय

मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश)

दूरस्थ शिक्षा

एम.ए. (पूर्वार्ध) जैनोलॉजी

(चतुर्थ पत्र)

-विषय-

जैनधर्म एवं न्यायमीमांसा

इकाई 1—"जैनधर्म" सम्प्रदाय नहीं, सार्वभौम धर्म है

पाठ-1 सम्प्रदाय निरपेक्षता का पाठ पढ़ाता है जैनधर्म
पाठ-2 जैनदर्शन आध्यात्मिकता की प्रयोगशाला है
पाठ-3 आत्म स्वातंत्र्य का प्रतिपादक जैनधर्म

इकाई 2—जैनदर्शन के कतिपय प्रमुख विषय

पाठ-1 जैनदर्शन में संसार स्वरूप
पाठ-2 जैनदर्शन में छह द्रव्य एवं पंचास्तिकाय
पाठ-3 जैनदर्शन में सात तत्त्व एवं नव पदार्थ
पाठ-4 जैनदर्शन में गुणस्थान एवं लेश्या

इकाई 3—आचार्य श्री कुन्दकुन्द की कृतियों में श्रावक एवं श्रमणधर्म

पाठ-1 श्री कुन्दकुन्दाचार्य का जिनभक्ति अनुराग
पाठ-2 श्री कुन्दकुन्ददेव द्वारा प्रतिपादित श्रावक धर्म
पाठ-3 मुनियों की सरागचर्या : कुन्दकुन्द की दृष्टि में
पाठ-4 वीतराग चारित्र एवं उसका फल

इकाई 4—न्याय विद्या की न्याययुक्तता

पाठ-1 जैन न्याय ग्रंथों के मंगलाचरण
पाठ-2 न्याय शास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता
पाठ-3 आचार्य अकलंक देव, समन्तभद्र एवं विद्यानंदि की जैन न्याय को देन
पाठ-4 जैन न्याय की उपयोगिता
पाठ-5 सर्वोच्च न्याय ग्रंथ : अष्टसहस्री

इकाई 5—विभिन्न दृष्टियों की अपेक्षा न्याय व्यवस्था

पाठ-1 जैनधर्म और राजनीति
पाठ-2 जैन न्याय में वाद की मौखिक तथा लिखित परम्परा
पाठ-3 (हरिवंशपुराण) महाभारतकालीन राजनीति व्यवस्था
पाठ-4 जैनधर्म की प्राचीनता एवं स्वतंत्रता के विषय में विभिन्न न्यायालयों के निर्णय
पाठ-5 संविधान निर्माण में जैनों का योगदान